गीता का 'निष्काम कर्म'

नीलू जायसवाल

गीता का कर्मयोग निष्काम कर्मयोग है। गीता का आदेश निष्काम भाव से कर्म करने के लिए है। निष्काम कर्मयोग का अर्थ है कि हम कर्म को सदैव साध्य के रूप में देखे, उसे कभी भी साधन के रूप में ग्रहण न करें। हम कर्म तो करें किन्तु कर्मफल में आसक्ति न रखें।

निष्काम कर्मयोग का वर्णन गीता के दूसरे अध्याय के 39वें श्लोक से आरम्भ हो जाता है। सम्पूर्ण गीता में कर्म के प्रति अहंता, ममता और आसक्ति का विरोध किया गया है, इसलिए इस प्रकार का विचार मिलता है कि तुम्हारा कर्म करने में ही अधिकार है, फल में नहीं, इसलिए तुम कर्मफल की वासनावाला मत बनों और कर्मों को छोड़ देने का विचार भी मत करो।